इंतज़ार

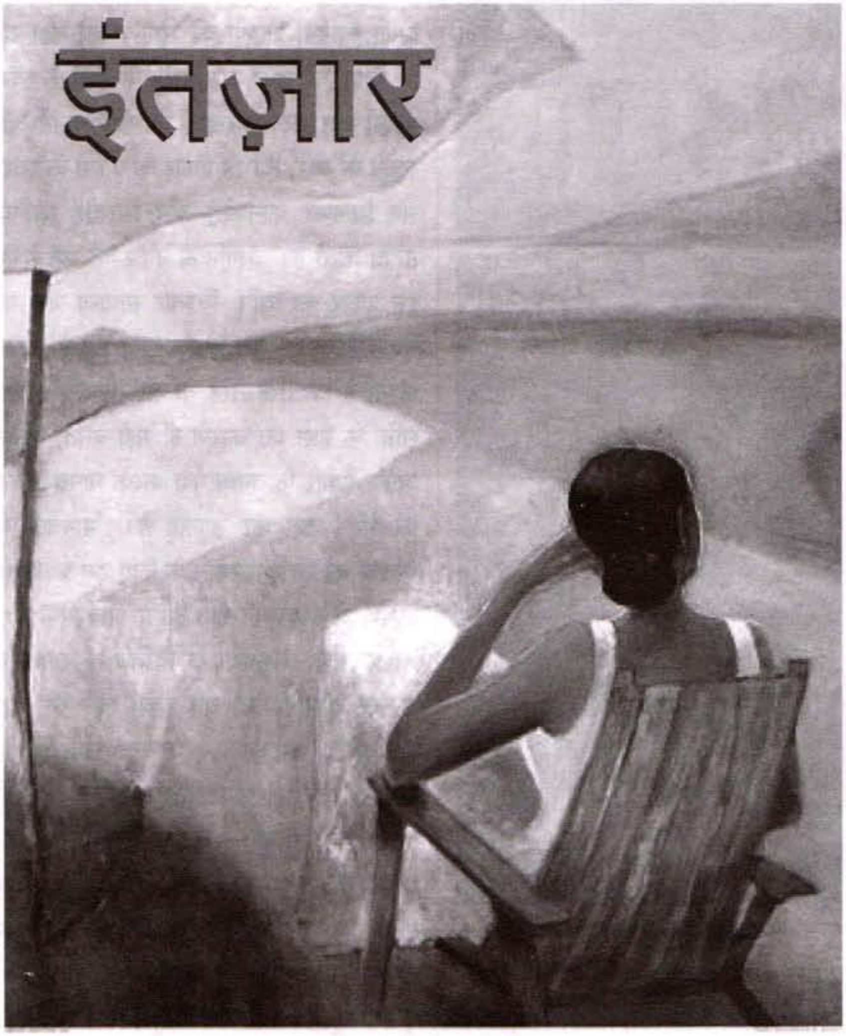

Anzila Ashraf
II B.Com.

कहते है, इंतज़ार करने से
बढता है प्यार, मगर
इंतज़ार करने वाला जानता है कि
किसी अपने के इंतज़ार में जीना
कितना मुश्किल होता है।
उन दिनों मानो सारी
खुशियाँ खो गई हो,
जीना हो गया हो दुश्वार
एक-एक पल बीतता है,
जैसे एक - एक साल,
याद आती है हर लम्हें जो
बिताए थे हमने साथ - साथ
आँखों के सामने एक ही
चेहरा उभरता है,
रहता है खयाल सिर्फ उनका,
जिनपर हम जानिसार करते है।
"या खुदा, सुनो ना हमारी पूकार,
लौटा दो हमें हमारी खुशियाँ,
वापस ला दो हमें हमारी जान,
जी नही सकते हम उनके बिना,
मरे भी तो कैसे उन्हें देखे विना।
दुआ है हमारी, रखना खयाल उनका,
दुःख का साया भी न पडने पाए,
हमसे दूर ज़रूर है, मगर
जहाँ भी रहे, उन्हें खुश रखना,
क्योंकि उनकी खुशी में
छिपी है हमारी खुशियाँ।" ◆

कैसी है यह जिन्दगी

Sruthi V. Pillai
I BSc Physics

खुशियों से भरपूर यह जीवन;
फूलों की जैसी हो बहार।
पर हो जाय सूना यह मन,
शीत में जैसे न हो तुषार।

अखियों मे आती है झलक,
मानो अंबर में झिलमिल सितारा।
पर झुक जाती है फिर पलक,
छुटे जब हर एक सहारा।

होता है एक ऐसा एहसास,
जैसे कोई नर्म पवन।
पर मिट जाए जीने की आस,
होती है जब काँटो की चुभन।

कैसी है यह जिन्दगी?
पूछे अकसर जब मेरा दिल,
कहता है हर लम्हा हर पल,
यारा, जीना है मुश्किल। ◆

वायुमण्डल का प्रदूषण

Dikhna Suresh
I B.Com

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या आज भारत समेत समूचे विश्व की सबसे बडी समस्या बन गयी है। वायु, जल और मिट्टी इन तीनों का समन्वित रूप पर्यावरण कहलाता है। विविध कारणों से इन तीनों का दोषपूर्ण हो जाना पर्यावरण प्रदूषण है। आज प्रत्येक राष्ट्र वैयक्तिक स्तर पर प्रदूषण की इस भयावह समस्या पर चिन्ता प्रक्ट कर रहा है। इस समस्या से छुटकारा पाने के उपायों पर राष्ट्रीय - अन्तराष्ट्रीय स्तरों पर विचार - विमर्श किया जा रहा है।

वायु-मण्डल के प्रदूषण की बात आज विशेष चर्चा का विषय बन गया है। इस प्रकार का प्रदूषण पहले मुख्य रूप से महानगरों और नगरों में पाया जाता है। परन्तु आज छोटे - छोटे शहर, कस्बे और गाँव भी इससे बचे हुए नही है। विशेषकर जो गाँव नगरों - महानगरों के आस पास बसे हुए है; उन्हें तो कतई सुरक्षित नही कहा जा सकता। यांत्रिक - औध्योगीकरण की प्रवृत्ति इस प्रदूषण का मुख्य कारण है। नगरों - महानगरों में ही नही, गलियों - मुहल्लों तक में भी कल - कारखानों के जाल -से बिछ गये है। कल-कारखानों की बडी-बडी चिमनियाँ जो धुएँ उगला करती है कई बार तो उससे राख और कोयले के कणों की वर्षा- सी होने लगती है। उससे सारा वातावरण, सारा वायु-मण्डल बोझिल रह जाता है। कल - कारखानों में जलने वाले विविध प्रकार के तेल, विविध रूपों में प्रयुक्त ज़हरीली गैसें आदि सभी मिलकर वायु-मण्डल इस प्रकार दूषित होता है कि सांस लेने पर स्वास्थ्य बिगड जाता है। ऐसे प्रदूषित बताबरण में जीनेवाले नाना प्रकार की बीमारियों के वश में पड जाते है।

आजकल विविध सवारियों की संख्या इतनी बढ गयी है कि पेट्रोल और डीज़ल का धुआँ वायु - मण्डल में बराबर मिला रहता है, जिसका मारक प्रभाव जन-जीवन पर पडता है। छोटी-बडी फैक्टरियों तथा विविध सवारियों से निकलने वाली ध्वनियाँ प्रदूषण की समस्या को बढा रही है। इंजनों की धर्धर, तरह तरह के हार्नों के स्वर, वाहनों और कल-कारखानों के पहिए चलने और रुकने के स्वर, विभिन्न प्रकार के वाध्यों के स्वर- सब मिलकर कानफोडू और सिरतोडू ध्वनियाँ उत्पन्न करते है। वैज्ञानिकों का स्पष्ट मत है कि इस प्रकार का ध्वनि -विस्तार सामान्य जनों की श्रवण-शक्ति पर बुरा प्रभाव डाल रहा है उनका कहना है कि तरह-तरह के शोर केवल श्रवण-शक्ति के ह्रास का कारण ही नही बनते, बल्कि अनेक प्रकार के तनाव पैदा करके मानव-चेतना को भी विकृत कर डालता है। मानवता के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए इस प्रकार के प्रदूषण से बचने का मार्ग ढूँढना आवश्यक है।

प्रदूषण -समस्या के विविध कारणों एवं उसके दुष्परिणामों की चर्चा लेने के बाद अब कुछ समाधान - कारक उपायों पर विचार कर लेना उचित होगा। सबसे पहले आवश्यक है कि यांत्रिक उद्योग-धन्धों की स्थापना मानव-बस्तियों से दूर बंजर भूमियों पर की जाए। इसी प्रकार वाहनों का रख - रखाव ऐसा हो कि वे दूषित धुआँ उगलकर प्रदूषण न फैलाएँ। ध्वनि प्रदूषण से बचने का उपाय भी सोचना चाहिए। प्राकृतिक सन्तुलन को बनाये रखने केलिए आवश्यक है कि वनों - वृक्षों की सुरक्षा का उचित प्रबंध किया जाए। वायु-मणडल को प्रदूषण से मुक्त करने केलिए इन समाधान - कारक साधनों को सफलता पूर्वक लागू किया जाना चाहिए। भविष्य में किसी भी प्रकार का ऐसा नियोजन न किया जाए जो वायु-मण्डल एवं वातावरण को किसी भी स्तर पर प्रदूषित करने वाला हो। दवाई से परहेज़ अधिक शुभ कहा गया है, इस बात को ध्यान में रखकर आज विकराल रूपधारण करने बाली इस समस्या से मानवता का भविष्य बचाया एवं सुरक्षित रखा जा सकता है। अन्य कोई उपाय नही। ◆

आज़ादी

Tenzin Noryang
III BA English Literature

आज फिर यह दिल रोने को होता है
उन बीते लम्हों को याद करके
वह सनू १९५९ का तीसरा महिना
जब हुआ मेरे देश पर चीन का आक्रमण।

फैलाये उसने मौत के काले झंडे
सुलाई लाखों को मौत की नींद
होके बेघर, लाखों, छोडके सब कुछ
चल दिये कही और बनके शरणार्थी।

दुखता है दिल यह महसूस करके
किसने क्या कुछ नहीं खोया?
छूट गया अपनों का साथ,
बस रह गयीं दर्द भरी यादें।

रहता है मन में डर यह हमेशा,
खो न जाय अपना अस्तित्व कहीं,
बढ रहा है वह इस कदर तिब्बत में,
ठान ली जिसने मिटाने को हमारा वजूद।

जलता है दिल यह, अंगारों सा,
कोसूँ तो किसको,
उसको, जिसने छीन लिया सब कुछ
या दोष दूँ अपनी किस्मत को,
जिस में नहीं सुख आज़ादी का? ◆

भारत उदय ... या अस्तमय?

Asha Antony
II M.A. English Literatur

'ढल गयी है रात, हुआ है नया सवेरा,
जागा है यह भारत, नया है यह उजियाला"

सुबह से शाम तक टेलिविशन और रेडियो में बस यही हम सुनते आ रहे है। भारत का नया उदय हो रहा है। लडकियाँ पढ रहीं है। सडके बन रहीं है। आर्थिक विकास हो रहा है (सबूत-किसानों के हाथों में मोबैल फोन) सभी के चेहरों पर मुस्कान। सरकार हमें विश्वास दिला रही है कि सब खुश हैं (फील-गुड फेक्टर) । लेकिन क्या सच्चाई यहीं है?

भारत विश्व का सबसे बडा गणतंत्र राष्ट्र है। दो सौ साल की गुलामी से भारत को मुक्त कराने के लिए हज़ारों लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान किया। किसान, मज़दूर, सिपाही, औरत, मर्द, सबोंने इस जंग में भाग लिए। अनेक लोग शहीद हुए। आज भी उस आज़ादी को कायम रखने के लिए अनेक जवान शहीद हो रहे है। इतनी कठिनाई और कुर्बानी से पाये गये स्वतंत्र भारत का आज क्या हाल है?

एक तरफ लोग भूख से मर रहे है। कर्ज में डूबे किसान आत्महत्या कर रहे है। दूसरी ओर लोग शराब की नशें में डूबकर अपनी जिन्दगी बरबाद कर र है। बेकारी बढ रही है। दस साल की लडकियों की शादी की जा रहे है। नारी को देवी मानकर पूजनेवाले भारत में स्त्रियों पर अत्याचार बढता जा रहा है । 'विविधता में एकता' के लिए प्रसिद्दध भारत में धर्म और जाति के नाम पर हिंसा है। गरीबों और दलितों का शोषण हो रहा है।

इन सबके बावजूद सरकार कह रही है कि "आगे बढने के लिए राहे कभी न इतनी शेर थीं"। चुनाव के पहले हर सरकार यहीं कहती है अगर कोई नेता रिखत लेते हुए पकड लिया जाता तो सरकार और विपक्ष एक दूसरे को दोषी ठहराते है। इसके बीच नेता बचकर निकल जाता है। और जनता इस नाटक का मूकसाक्षी बन जाती है। क्या यहीं गणराज्य है।?

कहा जाता है कि एक राष्ट्र का भविष्य उसकी युव पीढी के हाथों में है। लेकिन यहाँ के कुछ युवक अपने आसपास में घटनेवाली घटनाओं से अनजान अपने पर सीमित एक दुनिया में जी रहे है। दूसरी ओर कुछ युवक राजनीति में शामिल हैं, पर सिर्फ किसी बडे नेता के 'चमचे' के रूप में। इन नेताओं की स्वार्थ-सिद्धि के लिए ये युवक हडताल, तोड-फोड आदि

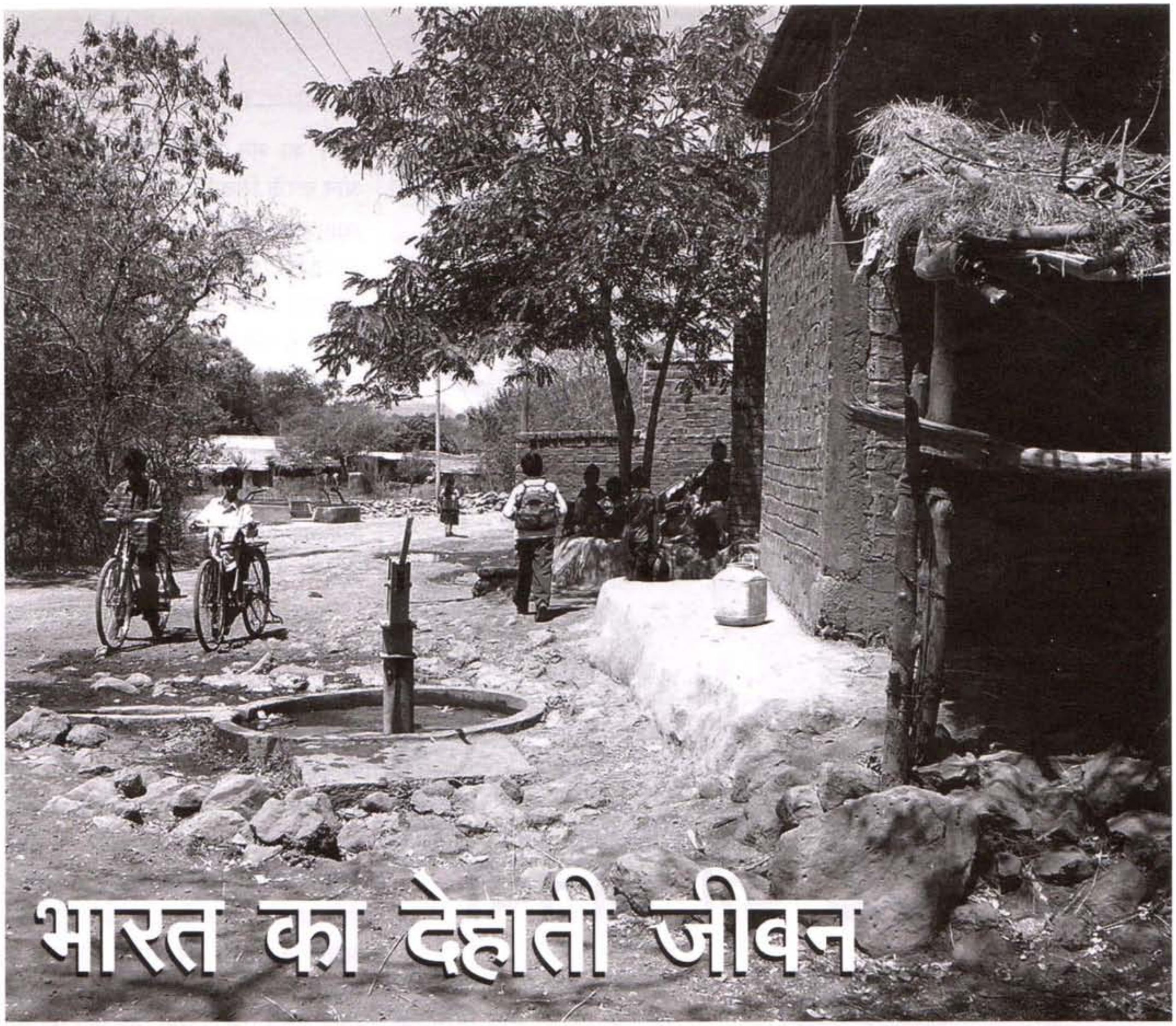

भारत का देहाती जीवन

Archana Ratish
II BSc Zoology

भारत कृषिप्रधान देश है, वह देहातो का देश है। कहा जाता है कि भारत में लगभग साढ्रे लाख गाँव है। देहाती जीवन की कल्पना शहर में रहने वाले लोग अच्छी तरह नही करसकते। कुछ दिन देहात में रहने से ही ग्राम्य जीवन से परिचय हो सकता है। भारत एक खएड प्राय देश है। इस कारण पूर्व, पश्चिम और उत्तर तथा दक्षिण का देहाती दीवन एक सा नही है। रहन-सहन वेश-भूष । और भाषा आदी में साम्य नही है। परन्तु मूलभूल समस्याएँ सब की एकसी है।

दक्षिण भारत के देहाती जीवन का परिचय इस प्रकार है - इस भाग मे सह्याद्रि पहाड उत्तर दक्षिण मे फैला हुआ है। यह भाग सपाट नही है। जगह-जगह पर छोटे-मोटे पहाड है। वर्षा-काल मे अनेक छोटी-छोटी नदिया सह्याद्रि से निकलकर समुद्र की ओर बहती है। इन नदियों के पास छोटी-छोटी बस्तियाँ है। वे ही देहात कहलाती है। यहाँ लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है। लोग मिट्टी के धरो मे रहते है। धरो के पास ही गाय-भैसो के तबेले होते है। किसान सुबह उठकर, नास्ता करके बैलों को लेकर खेतों में चले-जाते है। वे दोपहर तक काम करते है फिर खाना खाके आराम करते है। उठकर रात तक कामं करते है। देहातों में सिनेमा, मनीरंजक नाटक आदी नही होते। मनोरंजन के लिए देहाती किसी चौपाल या मन्दिर मे एकत्र होकर गाने-बजाने या कहानी किस्से कह कर दिल बहलाते है। गाँव के रास्ते मिट्टी से भरे होते है। वहाँ मोटर गडियाँ नही होती। बैलगाडी ही यहाँ का एकमात्र वाहन है। बच्चों की प्राथमिक शिक्षा की भी सब जगह व्यवस्था नही है। यहाँ के अधिकांश लोग अनपढ़ होते है। चित्तिसा का भी उचित प्रबन्ध नही है।

अब भारत स्वतन्त्र हो गया है और देश की उन्नति के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बन रही है। इन योजनाओं के अन्तर्गत ग्रामसुधार की ओर विशेष ध्यान दिया गया है और गाँवो मे पाठशलाओं एवं प्रौढ़-शिक्षा का प्रबन्ध किया जा रहा है। पर्याप्त सिचाई और अधिक उपज के लिए नहरें और बाँध बनाने के अलावा कृषि-उध्योग में अन्यान्य विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न यांत्रिक प्रयोग किया जा रहे है। अब छोटे-छोटे देहाती उध्योगों की प्रोत्साहन दिया जायेगा और भारतीय सभ्यता के प्रतीक ये देहात नवीन प्रगति की सीमाओं को छू लेंगे। ◆

आलोचक नामवर सिंह

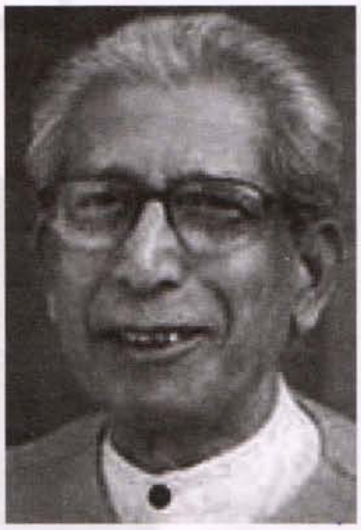

Usha Nair
Lecturer, Dept. of Hindi

डॉ नामवर सिंह हिंन्दी आलोचना के शिखर पुरुष माने जाते हैं। बीसवीं सदी के छठे दशक से आलोचना के क्षेत्र में उनकी सक्रिय हिस्सेदारी रही है। आज भी साहित्यिक परिदृश्य में उनकी अपराजेय उपस्थिति है। नामवर जी 'लोचन' को आलोचक का सबसे बडा शस्त्र मानते है। साहित्य को देखना, ठीक से देखना, उसकी बारीकियों को देखना और स्वयं देखी हुई बारीकियों को ईमानदाशी के साथ दूसरों को दिखाना ही उनकी नजर में आलोचक का दायित्व है।

'पुनीत' उपनाम के साथ ब्रजभाषा में काव्य रचना करते हुये नामवर जी ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत की। साहित्य जगत में फैली अराजकता ने ही उन्हें आलोचक बना दिया । रचनात्मक आलोचक, समर्थ वक्ता, सर्मपित अध्यापक और सफल संपादक के रूप में विविध साहित्यिक एवं साहित्येतर धरातलों पर उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उनके संबध में उनके आत्मीयों ने जो कुछ लिखा है उसके आधार पर जो चित्र उभरता है उसमें नामवर जी धोती कुर्ता पहनने वाले, सुर्ती मलने वाले, भोजपुरी बोलने वाले और कंचन की नगरी में किसानी संस्कृति के साथ रहने वाले व्यक्ति है। उनकी 'गरबीली गरीबी' और पुस्तक पकी ऑखों के विषय में काफी कुछ लिखा जा चुका है। उनकी प्रिय सूक्ति है, "चढिये हाथी ज्ञान को, सहज दुलीचा डाल, खान रुप संसार है, भूंकन जे झकमार"। यही साहस और आत्मविश्वास उनके आलोचना कर्म की वास्तविक पहचान है।

डॉ. नामवर सिंह के आलोचनात्मक लेखन का क्षितिज हिन्दी साहित्य के आदि काल से लेकर समकालीन साहित्य तक फैला हुआ है। उनकी आलोचना की मनोभूमि पर हिन्दी साहित्य के पुराने कालखण्ड के शोध एवं अध्ययन - मनन का गहरा असर पडा है, जिसके कारण उनकी आलोचना के प्रतिमानों में हिन्दी साहित्य के इतिहास और भारतीय परंपरा की गहरी समझ परिलक्षित होती है। आगे चलकर उन्होंने नये से नये रचनाकारों की नवीनतम रचनाओं की समीक्षा की। 'छायावाद' 'इतिहास और आलोचना' 'कहानी नई कहानी' 'कविता के नए प्रतिमान', 'दूसरी परंपरा की खोज', 'वाद विवाद संवाद' तथा 'आलोचक के मुख से' उनकी प्रमुख रचनायें है।

नामवर जी के आलोचना ग्रंथों में अधिकांश कविता पर केन्द्रित है। कवि 'पुनीत' जब आलोचक नामवर बने तो स्वाभाविक ही है कि कविता उनके आलोचना कर्म की प्रकृत भूमि बनी। कवि के रुप में उनकी जो संवेदनायें थीं, उन्हें आलोचक के रुप में उन्होंने बरकरार रखा। उनकी अर्थ-विश्लेषण की क्षमता उनकी सबसे बडी शक्ति है। कविता की तो प्रकृति ही ऐसी होती है कि उसकी शब्दाकृति में अर्थ की संभावनाएँ गुँथी रहती है। नामवर जी बहुत बारीकी से काव्यार्थ में पैठ करते है और लक्ष्यार्थ तथा व्यग्यार्थ की अंतिम संभावना का स्पर्श करते है।

नामवर जी वामपंथी विचारधारा के समर्थक है। मार्क्सवाद उनका बुनियादी दृष्टिकोण है, वह उनके लिये महज राजनीतिक सिद्धान्त नहीं है वरन् एक ऐसी विश्व दृष्टि है जिसका महत्वपूर्ण पक्ष है राजनीति। वे उसे जड शास्त्र नहीं मानते वरन् निरन्तर विकासशील दृष्टि मानते है। इतिहास की प्रवाहमान धारा से, मार्क्सवादी सिद्धान्तों और पाश्चात्य आलोचना के वांछ्नीय तत्वों के सम्मिलित प्रयोग से उन्होने सिद्ध किया कि ज्ञान के क्षेत्र में कुछ भी वर्ज्य नहीं है। वे भारतीय एवं पाश्चात्य गतिविधियों की गहरी जानकारी रखते हैं और उनकी दृष्टि में जो विचारधारा मार्क्सवादी आलोचना को समृद्ध करने में सहायक प्रतीत होती है, उसे अपनाने से वे नहीं कतराते।

नामवर जी रचना को समग्रता से देखते है। केवल विचारधारा या राजनीति के आधार पर उसका मूल्यांकन नहीं करते। उनके लिए साहित्यकार की सर्जनात्मकता सबसे महत्वपूर्ण है। 'कविता के नए प्रतिमान' की भूमिका में उन्होने लिखा है- - "मूल्यवान है एक भी ऐसे आलोचक का होना जो किसी भी चीज़ को तब तक अच्छा न कहे, जब तक उस निर्णय के लिए अपना सब कुछ दाँव पर लगाने के लिये तैयार न हो।" सर्जनात्मकता के पक्ष में नामवर जी अपना सब कुछ दाँव पर लगाने को तैयार रहते हैं। ◆

क्या यही है आज़ादी?

Susheela G. Raj
II BSc Chemistry

क्या यही है वह आज़ादी?
जिसके देखे थे सपने
की थी आशा तेरे
अमर, निडर पुत्रों ने, माँ?

तोपों और बमों की आवाज़
करती भौंचक्का बापू को।
जो हैं राजघट में सोते
नीन्द विश्राम भरी मृत्यु की।

मोर मकुट सा था विराजता
हिन्द का द्रुम भरा उद्यान
अब है भिगोया खून से जो
भारती माँ की आँखों को।

क्या यही है वह आज़ादी?
जिसकी याह में लटके थे,
जान लुटाकर, मान बचाकर
भगत, दत्त और राजगुरु।

गर्भ में पलते बच्चों को भी
क्या भरोसा, क्या है आशा
जनम लेने और जीने की
क्या यही है वह आज़ादी?

फूँक - फूँक में वर्ण विवेचन
स्त्रियों और बच्चों का शोषण।
चलता है अबलों पर शासन।
क्या यही है वह आज़ादी?

यहाँ भाई भाई में प्यार कहाँ?
इकरार कहाँ - विश्वास कहाँ?
सबको अपने आप की चिन्ता
और अपनों को भूल जाने की।

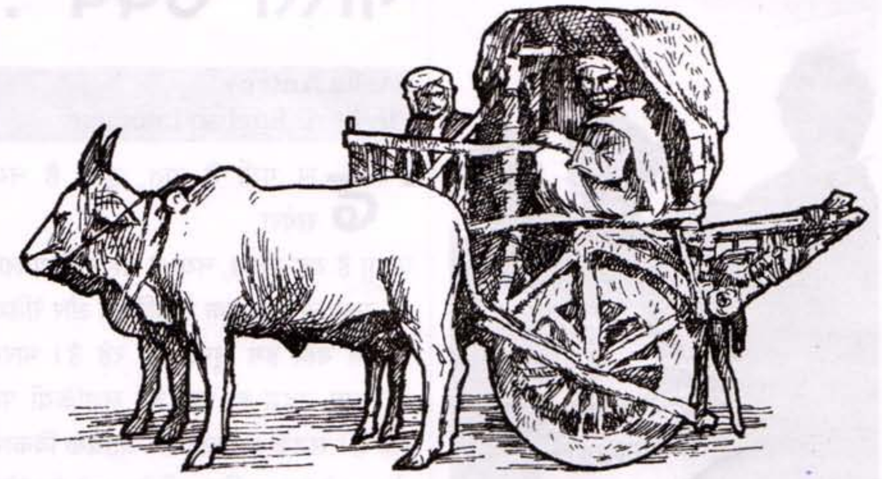

बैल गाडी

Ritu Kumari
II BSc Zoology

महानगर की धुआँधार सडक के
बीच थकी हुई खडी है।
एक बैल गाडी।
सब वाहन छोड रहे है धुआँ,
बैल छोड रहा है साँस।
ऐसा लगता है मानो,
चलकर आया है अनन्त कैलास से
अब - महानगरों की सडको पर दौड कर
गया है थक।

कभी पीछे देखता है
अपने मालिक के चलने की आवाज़ सुनकर,
कभी देखता है आगे...
सडकों पर चलती चमचमारी कारों के
भोंपू की आवाज़ सुनकर।
वह अब थक गया है,
चाहता है कुछ खाने को, पर अभी,
तय करना है एक लम्बा रास्ता,
जीवन की ओर।

घर जाकर
खायेगा भूसा, भरेगा ईंधन
जुगली करते - करते,
अन्य विचार उसके मस्तिष्क को
बना देंगे सागर।

अतः वह शान्त होकर,
प्राचीन - आधुनिक का किस्सा छोड,
स्वयं को समझाकर,
सो जायेगा,
यह सोचकर,
कल भी चलना है,
इस इक्कीसवी सदी की सडकों
को शोभित करती,
कारों अन्य वाहनों के साथ,
इस बैलगाडी को,
धीरे - धीरे
सभ्यता के विकास की ओर। ◆